ख़रबूज़े तथा तरबूज की काश्त

श्रीचारुचंद्र सान्याल

खरबूज़े तथा तरबूज की काश्त

[फ़ी एकड़ ५००) पैदा कर सकते हैं]

लेखक

श्रीचारुचंद्र सान्याल एल्० ए-जी०

(संपादक गवर्नमेंट एग्रीकलचरल जरनलस, यू० पी०, किसानोपकारक तथा मुफ़ीदुलमज़ारैन तथा भूतपूर्व सुपरिंटेंडेंट, गवर्नमेंट अनुसंधान-फ़ार्म, राजशाही, बंगाल और राजफ़ार्म, खरियार इत्यादि)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार

३६, लाटूश रोड

लखनऊ

द्वितीयावृत्ति

स्टिफ़ जिल्द ।।)] सं० २००३ वि० [सादी ।)

प्रकाशक
श्रीगोपीनाथ
गाँव-सुधार-पुस्तकमाला
नयागाँव, लखनऊ

अन्य प्राप्ति-स्थान—

१. दिल्ली-ग्रंथागार, चर्खेवालाँ, दिल्ली
२. प्रयाग-ग्रंथागार, १, जॉंसटनगंज, प्रयाग
३. काशी-ग्रंथागार, मच्छोदरी-पार्क, काशी
४. राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल, मछुआ-टोली, पटना
५. साहित्य-रत्न-भंडार, सिविल लाइंस, आगरा
६. हिंदी-भवन, अस्पताल-रोड, लाहौर
७. एन्० एम्० भटनागर ऐंड ब्रादर्स, उदयपुर
८. दक्षिण-भारत-हिंदी-प्रचार-सभा, त्यागरायनगर, मदरास

नोट—हमारी सब पुस्तकें इनके अलावा हिंदुस्थान-भर के सब प्रधान बुकसेलरों के यहाँ मिलती हैं। जिन बुकसेलरों के यहाँ न मिलें, उनका नाम-पता हमें लिखें। हम उनके वहाँ भी मिलने का प्रबंध करेंगे। हिंदी-सेवा में हमारा हाथ बँटाइए।

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

परिचय

ख़रबूज़ा और तरबूज दोनो कुम्हड़ा और ककड़ी के अंतर्जातीय फल माने गए हैं। वनस्पति-शास्त्र में भी इनकी गणना कुम्हड़ा-ककड़ी की जाति में की जाति है। ख़रबूज़े को अँगरेज़ी में कुकुमिस मेलन या मस्क मेलन कहते हैं। वनस्पति-शास्त्र में तरबूज को वाटर मेलन या सिटरुलाज़ वलगरीज कहते हैं।

चूँकि ख़रबूज़ा और तरबूज़ दोनो एक ही जाति के फल हैं, इस कारण इनके लिये खेत की तैयारी, बोआई, निकाई, गोड़ाई और सिंचाई इत्यादि प्रायः एक ही प्रकार होती है। ख़रबूज़ा योरप तथा अमेरिका के गर्म भागों में सफलता के साथ बोया जाता है।

गुण

ख़रबूज़ा—ख़रबूज़े का फल पक्की और कच्ची दोनो हालतों में खाया जाता है। कच्चा फल कुछ मिठास लिए हुए कड़ुआ होता है। स्वाद में खट्टापन रहता

है। पका ख़रबूज़ा खाने में मीठा होता है। इसकी सुगंधि अच्छी तथा रंग सुहावना होता है। ख़रबूज़े का फल पौष्टिक होता है, कोठे को शुद्ध करता है। पका हुआ ख़रबूज़ा वीर्यवर्धक तथा पित्त को समूल नष्ट करनेवाला होता है। स्निग्ध और उदर के रोगों को दूर करता है। संताप दूर करता है। मूत्र की वृद्धि करता है।

तरबूज़—ख़रबूज़े की तरह इसका फल भी कच्ची और पकी दोनो हालतों में खाया जाता है। यह बल-वर्धक तथा शीतल होता है। मल रोकता, पित्त नष्ट करता, दाह मिटाता और कोठे को तृप्त करता है।

उपयोग

ख़रबूज़ा और तरबूज़ दोनो मौसमी स्वादिष्ट फल हैं। ख़रबूज़े के बीज गर्मी के दिनों में ठंडाई में पीस-कर पीते हैं। इसका बीज किसी-किसी ओषधि में भी प्रयोग किया जाता है। ख़रबूज़ा और तरबूज़ दोनो का बहुत मीठा और स्वादिष्ट शरबत बनाया जाता है।

ख़रबूज़ा और तरबूज़ की फ़सलों को लोग मुफ़्त या

छाले की फ़सल कहते हैं, क्योंकि इनकी फ़सलें थोड़े परिश्रम तथा थोड़े व्यय में तैयार हो जाती हैं। इसके अलावा इनकी फ़सलें बलुहरी तथा भूड़ ज़मीनों में, जहाँ और कोई फ़सल नहीं पैदा की जा सकती, बहुत कामयाबी के साथ तैयार की जा सकती हैं। इनकी काश्त दूसरी फ़सलों के साथ की जा सकती है, और ऐसी हालत में इनके वास्ते किसी विशेष परिश्रम तथा व्यय की आवश्यकता नहीं होती। इलाहाबाद-ज़िले में, गंगा और जमुना के किनारे की ज़मीनों में, इनकी फ़सलें रबी की फ़सल (यानी जौ-गेहूँ) के साथ बड़ी आसानी से तैयार की जाती हैं। कहीं-कहीं ये फ़सलें ईख के साथ भी तैयार की गई हैं। फ़ैज़ाबाद तथा बाराबंकी-ज़िलों में, सरजू-नदी के खादर में, जहाँ ईख बिना सिंचाई के उत्पन्न की जाती है, उन्हीं ईख के खेतों में ख़रबूज़ा भली भाँति होता है। चूँकि ईख की बोआई जनवरी के आख़ीर और फ़रवरी में होती है, और ख़रबूज़े बोने का भी क़रीब-क़रीब यही समय होता है, इसलिये ईख के साथ थालों में ख़रबूज़े बो देते हैं। ईख की गोड़ाई तथा सिंचाई के साथ ख़रबूज़े की भी गोड़ाई और सिंचाई हो जाती है। ख़रबूज़े की

फ़सल जून तक ख़त्म हो जाती है, और ईख इस समय तक बहुत छोटी रहती है। दूसरे साल अगेती पेड़ी तैयार करने में फिर ख़रबूज़े की काश्त ईख के साथ कर सकते हैं। ईख की फ़सल लेते हुए भी ख़रबूज़े की फ़सल की आय ४५) से ७५) फ़ी एकड़ तक पाई गई है। इलाहाबाद के ज़िले में ख़रबूज़े की फ़सल की आय ५०) से ८०) तक फ़ी एकड़ पाई गई है। इस आय के लिये विशेष परिश्रम तथा व्यय की आवश्यकता नहीं होती। केवल गीदड़ वग़ैरह से रखवाली करनी पड़ती है।

व्यापारिक दृष्टि से इन्हें अकेले ही बोना श्रेयस्कर और लाभदायक सिद्ध हुआ है। ख़रबूज़ा और तरबूज़ साथ-साथ बोए जा सकते हैं। कभी-कभी इनके साथ कुम्हड़ा और ककड़ी की भी बोआई की जा सकती है।

क़िस्में

ख़रबूज़ा—ख़रबूज़े कई प्रकार के होते हैं। संयुक्त प्रांत में इसकी ख़ास-ख़ास क़िस्में निम्न-लिखित हैं—

चितला, सफ़ेदा, खर्रा, सर्दा, धारीदार, जौनपुरी इत्यादि।

सफ़ेदा, जिसे लखनौआ भी कहते हैं, बहुत मीठा तथा सुगंधित होता है।

खेड़ी-नामक ख़रबूज़ा वीरभूमि में अच्छा होता है। अंबाले का ख़रबूज़ा भी अच्छा होता है।

तरबूज़—तरबूज़ दो प्रकार के होते हैं—एक काले बीजों का और दूसरा लाल बीजों का। काले बीजवाले फलों का गूदा गुलाबी और पीले रंग का तथा लाल बीजवाले फलों का गूदा लाल, गुलाबी और पीले आदि सभी रंग का होता है। साधारणतया तरबूज़ की उपर्युक्त दो ही प्रसिद्ध तथा बाज़ारू क़िस्में हैं। यों तो इसे भिन्न-भिन्न स्थानों में स्थानीय नामों से—फ़र्रुख़ाबादी, इलाहाबादी इत्यादि—प्रसिद्ध किए हैं।

भूमि और फलों पर उसका असर

ख़रबूज़े और तरबूज़ यों तो बलुहरा और मटियार दोनों प्रकार की ज़मीनों में पैदा होते हैं, किंतु ख़रबूज़े के लिये दूमट ज़मीन अधिक उपयोगी मानी गई है। नदियों की रेती में ख़रबज़े की फ़सल बड़ी ज़ोरदार होती है, लेकिन फल उतना मीठा नहीं होता, जितना दमट ज़मीन का। बलुआ ज़मीन की अपेक्षा दूम

ज़मीन में उपज कम होती है। दूमट ज़मीनवाले फलों का छिलका, बलुहरी ज़मीनवाले फलों के छिलके की अपेक्षा, अधिक मोटा होता है, और इसी कारण दूमट ज़मीन के फल ज़्यादा दिनों तक नहीं सड़ते।

तरबूज़ की फ़सल प्रायः नदी के किनारे और रेतीली मिट्टी में अधिक होती है। खरबूज़े और तरबूज़ की फ़सल यों तो और फ़सलों के साथ या ख़रीफ़ की फ़सल काटकर भी खेतों में बोते हैं, लेकिन व्यापारिक दृष्टि-कोण से इनकी खेती पलिहर या चौमास खेतों में करना अच्छा माना गया है।

खेत की तैयारी

जब चौमास या पलिहर खेत में फ़सल बोनी होती है, तो खेत की काफ़ी जोताई करते हैं, और अगस्त से लेकर जनवरी के आख़ीर या फ़रवरी के शुरू तक १० या १२ जोताई कर देते हैं। चूँकि ख़रबूज़े और तरबूज़ की जड़ें जमीन में ज़्यादा गहराई तक नहीं जातीं, और पौदे भी एक दूसरे से काफ़ी फ़ासले पर होते हैं, इसलिये कम जोताई या केवल फावड़े से थाले की काफ़ी गोड़ाई करके भी बोने से ये फ़सलें ख़ूब होती हैं।

दूसरी फ़सलों के साथ ख़रबूज़े तथा तरबूज़ की बोआई थालों ही में की जाती है। ख़ाली ख़रबूज़ा और तरबूज़ की फ़सल बोने के लिये खेतों की कम जोताई करने से दो प्रकार की हानियाँ पाई गई हैं। पहले तो आगे साल के वास्ते खेत कमज़ोर हो जाते हैं; दूसरे, घास-फूस उग आने, फलों के सड़ने और कीड़ों से नुक़सान का अंदेशा रहता है। इसके अलावा खेत की काफ़ी जोताई करने से मिट्टी ख़ूब सूख जाती है, और बारिश होने से खेत काफ़ी मज़बूत हो जाते हैं। नदी की तराई या रेतीली ज़मीन में थालों को फावड़े से गोड़कर बोने ही से काम चल जाता है।

खाद

ख़रबूज़े और तरबूज़ के वास्ते गोबर की सड़ी खाद या म्युनिसिपैलिटी की खाद अधिक लाभदायक होती है। रासायनिक खादों के प्रयोग में नाइट्रोजन, पोटाश और फ़ास्फ़ोरिक एसिड का मिश्रण सर्वोत्तम माना गया है। डोनल्ड मार्टिन का अनुभव है कि पोटाश के प्रयोग से फलों में मिठास ज़्यादा आती है। नाइट्रेट

ऑफ् सोडा और फ़ास्फ़ेट के प्रयोग से फल बड़े और स्वादिष्ठ होते हैं। फ़ी एकड़ १५० मन गोबर की खाद काफ़ी मानी गई है। यदि थालों में बोया जाय, तो फ़ी थाला डेढ़ से दो सेर तक खाद काफ़ी होती है।

बीज की तैयारी

किसी फ़सल की कामयाबी ज़्यादा अंशों में उसके बीज पर निर्भर है। यदि बीज कमज़ोर तथा रोगी पौदों से या कच्ची हालत में लिए जाते हैं, तो पहले तो वे जमते ही कम हैं, और जो जम भी जाते हैं, तो पौदे कमज़ोर रहते हैं। इसका असर फ़सल पर जाकर पड़ता है—यानी फल छोटे, निस्स्वाद, ख़राब रंग के तथा संख्या में भी कम आते हैं। इस कारण हरएक किसान का सबसे पहला कर्तव्य यह होना चाहिए कि वह आगामी फ़सल के वास्ते उत्तम बीज का प्रबंध कर ले। बीज के लिये आगामी वर्ष बोनेवाले रक़बे के हिसाब से फल चुनकर छोड़ देने चाहिए, और उन फलों को बाज़ार न भेजकर अपने तथा अपने कुटुंबियों के खाने के वास्ते रखना चाहिए। एक एकड़ के वास्ते लगभग ४०

अच्छे खरबूज़े और इतने ही तरबूज़ काफ़ी होते हैं। खरबूज़े के बीज की ४० गड्डियाँ या ४० तरबूज़ के बीज एक एकड़ के वास्ते ज़्यादा हैं। मगर फिर भी कुछ ज़्यादा बीज रखना अच्छा है, क्योंकि उनमें से कुछ खराब भी निकल सकते हैं। इसके अतिरिक्त यदि बीज अपनी बोआई से बच जाते हैं, तो बाज़ारों में अच्छी क़ीमत पर बिक भी जाते हैं। एक एकड़ में क़रीब २,७०० खरबूज़े के और १,२०० तरबूज़ के दरख़्त होने चाहिए। और, चूँकि हरएक थाले में ४ बीज बोना उचित माना गया है, इस कारण २,७०० खरबूज़े और १,२०० तरबूज़ के पौदों के लिये हमें क्रमशः १०,८०० खरबूज़े के और ४,८०० तरबूज़ के बीज बोने चाहिए। खरबूज़े के बीज की एक औसत गड्डी में क़रीब ३०० के अच्छे और मज़बूत बीज निकल सकते हैं। इस हिसाब से खरबूज़े की ३६ गड्डियों की हमें आवश्यकता पड़ती है। कीड़ों या और बीमारियों से आक्रमित होने के लिये ४ गड्डियाँ ज़्यादा रख देना उचित समझा गया है। तरबूज़ में खरबूज़े की अपेक्षा कम बीज पाए जाते हैं। एक तरबूज़ में अच्छे, भरे-पुरे तथा मज़बूत बीज

क़रीब १५० के पाए जाते हैं। इस प्रकार ४,८०० बीजों के वास्ते ३२ तरबूजों की आवश्यकता होती है। ख़रबूज़े की अपेक्षा तरबूज़ में कम बीज होते हैं, इस कारण गणना के अनुसार ८ फलों के बीज ज़्यादा रखना मुनासिब है। बाज़ार से ख़रीदकर बोने के लिये फ़ी एकड़ आध सेर ख़रबूज़े का और क़रीब २ सेर तरबूज़ का बीज काफ़ी होगा। बीज के फलों के चुनाव के समय निम्न-लिखित बातों पर काफ़ी ध्यान देना चाहिए। बीज के फल दाग़ी न होने चाहिए। पौदे तंदुरुस्त और झाड़दार होने चाहिए। बीज के फलों को पहली फ़सल से चुनना चाहिए, क्योंकि पहली फ़सल के फल बड़े और नीरोग होते हैं। इन फलों को काफ़ी पक जाने पर तोड़ना चाहिए। फल खाने के बाद ख़रबूज़े की गड्डी साफ़ पानी में हलके हाथ हिला लेनी चाहिए, और इसके बाद उसे सुखाकर रख देना चाहिए। तरबूज़ के बीज अच्छी तरह धो सकते हैं। ख़रबूज़े की गड्डियों को ख़ूब मलकर इस कारण नहीं धोते कि ऐसा करने से उसके बीज अलग-अलग हो जाते हैं, और ऐसी हालत में उनके ख़राब होने का अधिक अंदेशा रहता है। सुखाने के बाद

बीजों को ऐसे डिब्बे में रखना चाहिए, जिसमें हवा का प्रवेश न हो सके।

बोआई और उसका समय

हमारे देश में ख़रबूज़ा और तरबूज़ पौष तथा माघ के महीने में बोए जाते हैं। फाल्गुन और चैत्र में इनमें फूल आते हैं। वैशाख में फल आते और बढ़ते हैं तथा ज्येष्ठ में पककर खाने लायक़ हो जाते हैं। किसी देश में तरबूज़ की फ़सल प्रत्येक मौसम में बोई जाती है, और फल भी काफ़ी बड़े होते हैं। उनका वज़न एक-एक मन के लगभग होता है।

बोआई के लिये जब खेत या थाले तैयार हो जायँ, तो चुनकर रक्खे हुए बीज की गद्दियों को चुन लेना चाहिए। उनमें से ख़राब गद्दियों को निकाल देना चाहिए। अच्छी गद्दियों की पहचान आमतौर से यह होती है कि वे ख़राब गद्दियों की अपेक्षा अधिक वज़नी होती हैं। अच्छी गद्दियों को पानी में भिगो देना चाहिए और उनके काफ़ी घुल जाने पर हलके हाथ से उन्हें मलना चाहिए, ताकि बीज एक दूसरे से अलग हो जायँ। गद्दियों को फोड़कर कभी बीज न निकालना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से बीज ख़राब हो जाते हैं। इस तरह

अलग होने पर कुछ बीज पानी में तैरते हुए मिलेंगे और कुछ बर्तन की पेंदी में बैठे हुए। तैरते हुए बीजों को फेंक देना चाहिए, क्योंकि वे खराब और कमज़ोर होते हैं। अच्छे बीजों को पानी से निकालने के बाद खाद के ढेरों में दबा देना चाहिए, ताकि खाद की गर्मी से उनमें अंकुर निकल आवें। तरबूज़ के वास्ते अच्छे बीजों का चुनाव कर लेना चाहिए। अच्छे बीजों की पहचान यही है कि वे वज़नी होते हैं, और साथ ही यह भी देख लेना चाहिए कि वे कीड़ों के हमले से बचे हों। बीजों को सूप से पछोरकर या हवा में ओसाकर भी हलके और वज़नी बीज अलग किए जा सकते हैं। बीजों को पंक्तियों में बोना चाहिए। खरबूज़े की पंक्तियाँ चार-चार फ़ीट के फ़ासले पर और तरबूज़ की छ-छ फ़ीट के फ़ासले पर बनानी चाहिए। हरएक पंक्ति में चार-चार और छ-छ फ़ीट की दूरी से क्रमशः नौ-नौ इंच के सूराख़ बनाने चाहिए। इन सूराख़ों में राख डालकर चार-चार बीज हर सूराख़ में बोने चाहिए। दूसरी फ़सलों के साथ बोने के लिये खरबूज़ा छ से आठ फ़ीट तक और तरबूज़ नौ से बारह फ़ीट के फ़ासले से थाले बनाकर चार-चार बीज हर थाले में बोना चाहिए।

निकाई और गोड़ाई

जब पौदे उग आवें, और दो-दो या तीन-तीन पत्तियों के हो जायँ, तो एक जगह पर उगे हुए तीन-चार पौदों में से सबसे हरे-भरे और मज़बूत पौदे को रखना चाहिए, बाक़ी पौदों का उखाड़कर फेंक देना या आवश्यकतानुसार दूसरी जगह लगा देना चाहिए। यदि पौदों को दूसरी जगह लगाने का इरादा हो, तो उनको आहिस्ता से खुरपी से कुछ मिट्टी लेकर निकालना चाहिए, ताकि उनकी जड़ें टूट न जायँ। लगाने के बाद फ़ौरन् पानी देना चाहिए, ताकि पौदे लग जायँ। अगर पौदे सावधानी से न उखाड़े जायँगे, और उनकी जड़ें टूट जायँगी, तो हरगिज़ नहीं लगेंगे। तीन-चार सप्ताह बाद उनके थालों के आस-पास या जहाँ तक उनका फैलाव हो, खुरपी या कुदाल से गोड़ना चाहिए, और गोड़ने के बाद मिट्टी पैर या हाथ से बराबर कर देनी चाहिए, ताकि गुड़ी हुई ज़मीन में नमी काफ़ी अरसे तक क़ायम रहे। इसके ८ या १० रोज़ बाद फिर कुदाल से गोड़ाई करनी चाहिए। गोड़ाई के बाद ढेले तोड़कर मिट्टी बराबर कर देनी चाहिए। हर सिंचाई के बाद—उस वक़्त तक, जब तक पौदे फैलकर एक दूसरे

से मिल न जायँ, गोड़ाई करते रहना चाहिए। इससे ज़मीन में ज़्यादा अरसे तक नमी क़ायम रहती है, और सिंचाई की कम आवश्यकता पड़ती है।

प्रारंभिक अवस्था के रोग और उनके बचाव

जब पौदे छोटे-छोटे रहते हैं, तो उनमें एक प्रकार के कीड़े लग जाते हैं, जो उनकी पत्तियाँ खा जाते और डंठल का रस चूसकर उन्हें बहुत जल्द सुखा देते हैं। इनसे बचाने के लिये पौदों पर कंडे या उपले की राख छिड़कनी चाहिए। इनमें एक दूसरा रोग फुईं का भी लग जाता है, जिसके लिये बोर्डो-मिक्श्चर बहुत लाभकारी है।

कहीं-कहीं बाँस के टट्टर बाँधकर उन पर पौदों को चढ़ा देते हैं। टट्टर के प्रयोग से पैदावार में काफ़ी इज़ाफ़ा होता है, यहाँ तक कि कभी-कभी फ़सल चौगुनी हो जाती है। टट्टर के प्रयोग से फल ज़्यादा बड़े होते और कीड़ों वग़ैरह के आक्रमण से बचे रहते हैं। फल सड़ते कम हैं, और दाग़ी नहीं होते। इससे गोड़ाई और सिंचाई में भी आसानी होती। इस प्रकार टट्टर की लागत और फ़सल की पैदावार तथा गोड़ाई-सिंचाई

की लागत की कमी की तुलना करने पर टट्टर बाँधना ही उत्तम माना गया है। इसके अलावा एक साल टट्टर बाँधकर सावधानी से रखने और प्रयोग करने से वे कई साल तक काम दे सकते हैं।

सिंचाई

खरबूज़े और तरबूज़ की फ़सल तीन माह के अंदर तैयार होकर ख़त्म हो जाती है। इनकी सिंचाई के वास्ते यह नहीं कहा जा सकता कि कितने रोज़ बाद सिंचाई करनी चाहिए, क्योंकि सिंचाई का समय ज़मीन, मौसम, हवा और धूप पर निर्भर है। इस कारण सिंचाई के वास्ते समय नियत करना ठीक नहीं। सिंचाई के लिये सिर्फ़ इस बात का ख़याल रखना चाहिए कि जब गुड़ी मिट्टी में नमी न रह जाय, पत्तियाँ धूप से मुरझाने लगें, तो समझना चाहिए कि अब पानी देने की आवश्यकता है। लेकिन साधारणतया यह पाया गया है कि जब पौदे छोटे रहते हैं, तो उनको ४ या ६ रोज के बाद पानी देना चाहिए। इसके बाद १० से १५ रोज़ के बाद पानी देना चाहिए, और जब फल आ जायँ और पकने पर हों, तो पानी बिल-

कुल बंद कर देना चाहिए। तरबूज़ में ख़रबूज़े की अपेक्षा अधिक पानी की आवश्यकता होती है। पूरी फ़सल तक ६ से ८ पानी तक की आवश्यकता है।

पके फल की पहचान

तरबूज़ के पके फलों की निम्न-लिखित पहचान है—

(अ) तरबूज़ पर हाथ मारने से भद्-भद् की आवाज़ होती है।

(ब) जिस तरफ़ तरबूज़ ज़मीन पर पड़ा रहता है, उस तरफ़ पीला दाग़ पड़ जाता है। और यह पीला हिस्सा काष्ठवत् हो जाता है।

(स) पका तरबूज़ हाथ से दबाने से लोच खा जाता है। पके ख़रबूज़े की पहचान सभी कर सकते हैं। इसके छिलके पीले पड़ जाते हैं। चित्तियों में भी पीलापन आ जाता है। अच्छी और मस्त सुगंधि आने लगती है।

मौसम और फ़सल

हरएक फ़सल की कामयाबी मौसम पर निर्भर ख़रबूज़े की फ़सल पर हवा का बहुत ज़्यादा

असर पड़ता है। शुरू-शुरू में पुरुआ हवा बहुत फ़ायदेमंद होती है, क्योंकि इससे पौदे ख़ूब बढ़ते और फैलते हैं। फूल जल्द आते और गिरते कम हैं। फल आते ही पुरुआ हवा का पछुआ में बदल जाना बहुत लाभप्रद है, क्योंकि पछुआ हवा में फल ज़्यादा आते हैं। फल पकने के समय यदि ज़ोर की लू चलने लगे, तो फ़सल को बहुत फ़ायदा पहुँचता है। तेज़ लू में फलों का रंग अच्छा हो जाता और काफ़ी सुगंध तथा मिठास आ जाती है। इससे बाज़ार में उनकी क़ीमत अच्छी मिलती है।

फ़ी एकड़ आमदनी की औसत

ख़रबूज़े और तरबूज़ की फ़ी एकड़ आमदनी की औसत फलों की संख्या, उनके रूप-रंग और सुगंध पर निर्भर है। फ़ी एकड़ आमदनी की न्यूनाधिकता निम्न-लिखित बातों पर निर्भर है—

(अ) स्थानीय बाज़ार की दूरी और निकटता—यदि बाज़ार दूर है, तो फलों के भेजने में ज़्यादा ख़र्च पड़ता है, और फल देर में तथा कुछ अंशों में ख़राब होने पर पहुँचते हैं। बाज़ार नज़दीक होने से फल

कम खरचे और ताज़ी हालत में पहुँच जाते हैं, और अच्छी क़ीमत पर बिकते हैं।

(ब) पैकिंग—फलों की पैकिंग उनके विक्रय के लिये बहुत बड़ी बात है। यदि फल अच्छी तरह पैक कए रहते हैं, तो रास्ते में कम खराब होते हैं।

(स) बाज़ार का प्रबंध—बाज़ार के प्रबंध से यह मतलब है कि यदि बाज़ार में कुँजड़े-कबड़ियों की धींगाधींगी रहती है, तो किसानों का माल जिस क़ीमत पर वे चाहते हैं, ख़रीद लेते हैं। फ़ी एकड़ आमदनी पर चुंगी का भी असर पड़ता है।

(द) आवागमन की सुविधाएँ—बाज़ार तक फल ले जाने के द्वारा तथा सड़कों का भी असर फ़सलों की आय पर पड़ता है।

संक्षेपतः यहाँ बाज़ार में क्रय-विक्रय की सुविधाओं तथा असुविधाओं और उपर्युक्त बातों पर ध्यान देना इस कारण ज़रूरी है कि साधारणतया इन्हीं बातों पर किसी भी फ़सल की आमदनी निर्भर है।

ख़रबूज़े की माँग हमारे सूबे के बाहर भी काफ़ी रहती है। कलकत्ते के बाज़ार में लखनऊ के ख़रबूज़ों की काफ़ी खपत है। पंजाब में भी इसकी काफ़ी माँग

है। पंजाब से हर साल काफ़ी व्यापारी फ़सल तैयार होने के समय आते और खेत में ही फ़सल ख़रीद लेते हैं। लखनऊ-ज़िले के काकोरी-क़स्बे में भी ये लोग आ जाते और आस-पास की सब फ़सलें ख़रीद लेते हैं। आजकल गवर्नमेंट की तरफ़ से को-ऑपरेटिव विभाग भी इस तरफ़ ध्यान दे रहा है। और, स्थानीय व्यापारियों के लिये फ़सलें ख़रीदने के वास्ते रुपए का तथा और भी समुचित प्रबंध कर रहा है।

ख़रबूज़े तथा तरबूज़ की फ़ी एकड़ आमदनी और ख़र्च का अनुमान नीचे दिया जाता है, लेकिन ये आँकड़े स्थानीय अवस्थाओं तथा सुविधाओं के अनुसार घट-बढ़ भी सकते हैं—

चार फ़ीट के फ़ासले से बोने पर एक एकड़ में ख़रबूज़े के २,७२२ पौदे होते हैं। हरएक पौदे से १० फल का औसत रखने से एक एकड़ में २७,२२० फल पैदा हो सकते हैं। औसत क़द के फल एक सेर में ५ आते हैं। इस प्रकार २७,२२० फलों का वज़न ५,४४० सेर होता है। साधारणतया ख़रबूज़े का भाव एक आना फ़ी सेर होता है। ख़रबूज़ की यह दर शुरू फ़सल में ज़्यादा और मध्य में कम भी रहती है, लेकिन

यहाँ अनुमान के वास्ते खरबूज़े की दर एक आना फ़ी सेर रक्खी जाती है। इस प्रकार ५,४४० सेर की क़ीमत ३४०) होती है। अब यह बात मालूम हो गई, कि फ़ी एकड़ ख़रबूज़े से ३४०) पैदा किए जा सकते हैं लेकिन इसके ख़िलाफ़ ख़रबूज़े की काश्त का फ़ी एकड़ औसत ख़र्च नीचे दिया जाता है—

एक एकड़ ज़मीन का लगान	१५)
जोताई की लागत	१२)
खाद	१५)
बीज और बोआई का ख़र्च	४)
सिंचाई	२४)
गोड़ाई, निकाई वग़ैरह	१०)
बाज़ार में फ़सल पहुँचाने और चुंगी वग़ैरह	२०)
	१००)

तरबूज़ की फ़सल का ख़र्च तो वैसे ही है, जैसे ख़रबूज़े की फ़सल का, इसलिये उसकी आमदनी ही के आँकड़े यहाँ निकाले जाते हैं। तरबूज़ ६ फ़ीट के फ़ासले से बोया जाता है, इसलिये फ़ी एकड़ तरबूज के १,२१० पौदे बोए जा सकते हैं। एक पौदे से ५ फल का औसत रखने से एक एकड़ में ६,०५० फल पैदा होते

हैं। यों तो तरबूज़ के बड़े फल दो से तीन आने तक बिकते हैं, लेकिन औसतन फ़ी फल की क़ीमत एक आना रक्खी जाती है। इस प्रकार ६,०५० फलों की क़ीमत ३६५।।=) होती है।

अब ख़रबूज़े और तरबूज़ के आँकड़ों की तुलना से यह बात मालूम होती है कि तरबूज़ की फ़सल की फ़ी एकड़ आमदनी ख़रबूज़े की फ़सल से ज़्यादा है।

उपरि-लिखित आँकड़ों से यह प्रतीत होता है कि ख़रबूज़े और तरबूज़ की फ़ी एकड़ आमदनी क्रमशः ३४०) और ३६५।।=) है, जिसके ख़िलाफ़ फ़ी एकड़ ख़र्च १००) है। इस प्रकार ख़रबूज़े तथा तरबूज़ से क्रमशः २४०) और २६५।।=) फ़ी एकड़ की आमदनी की जा सकती है। अगेती फसल बोने और अच्छे बाज़ार निकट होने से आमदनी दूनी बढ़ाई जा सकती है, अर्थात् ख़रबूज़े की फ़ी एकड़ आमदनी ३५०) और तरबूज़ की फ़ी एकड़ ४५०) तक की जा सकती है।

इन आमदनी के आँकड़ों के देखने से अंत में यह कह देना कि "ख़रबूज़े और तरबूज़ की फसलें सोना उगलती हैं" काफ़ी है।